फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने - बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

रचना घटना की
रचना शत्रु की

हर राजसत्ता की आतंकवाद की आवश्यकता बढ रही है। अपने होने को जायज ठहराने के वास्ते सरकारों के लिये आतंकवाद अधिकाधिक जरूरी है।

नई सीरीज नम्बर 165 मार्च 2002

बातें ... ज्यादा बातें ... लेकिन कौनसी बातें ? (3)

"40-50 वर्ष पहले गढवाल में 5 वर्ष की आयु के बच्चों को गाँव में इक्ट्ठे कर वसन्त पँचमी के शुभ दिन गाजे-बाजे के साथ विद्यालय में नाम लिखाने ले जाते थे। हल चलाने वाले पिता की इच्छा होती थी कि उसका बच्चा हल चलाने वाला नहीं बने – इसलिये पढे। छुट्टियों में नौकरी से लौटने वालों के तामझाम बच्चों को स्कूल जाने को प्रेरित करते थे।"

"अपने बच्चों को पहले कहते थे कि सच्चा-ईमानदार होना चाहिये लेकिन अब कहते हैं कि वैसे चल ही नहीं सकते, चालाक होना ही चाहिये। इस समाज में जिन्दा रहने के लिये स्कूलों में 'चालाकी' भी एक विषय के तौर पर पढाई जानी चाहिये।"

वर्तमान समाज व्यवस्था की पवित्रतम गऊओं में है विद्यालय – चर्चा में अत्यन्त धीरज के लिये अनुरोध है।

शहर पर चर्चायें अक्सर समस्याओं, सुधार के लिये सुझावों और इस-उस शहर के बारे में बातचीत में सिकुड़ जाती हैं। यह बहुत-ही कम होता है कि स्वयं "नगर" पर, सिटी एज सच पर बातचीत केन्द्रित होती हो। यही हाल नौकरी पर बातचीतों का है। विद्यालय के बारे में बात करना, स्कूल एज सच पर चर्चा तो हमें और भी कठिन लगी है।

जबकि, नगर, नौकरी, फैक्ट्री, दफ्तर, प्रतियोगिता, सेना, स्कूल आदि स्वयंसिद्धों-एग्जियम्स पर सवाल उठाना वर्तमान समाज व्यवस्था पर सवाल उठाना है। इन स्वयंसिद्धों पर बातचीत दुर्गत की जननी वर्तमान समाज व्यवस्था से छुटकारे के लिये प्राथमिक आवश्यकताओं में एक है।

थोड़ा इतिहास

स्वामी और दास, सामन्त और भूदास वाली ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं में अक्षर-ज्ञान सीमित था, सीमित रखा जाता था। पुरोहित-पादरी-मौलवी तक पढाई-लिखाई समेटे रखने के लिये आम जन की भाषा से अलग भाषा, संस्कृत-लैटिन, का भी प्रयोग किया जाता था। स्वामी-पुत्रों, राजकुमारों, पुजारी-पुत्रों तक विद्यालय सीमित थे। जाहिर है कि ऊँच-नीच वाली उन व्यवस्थाओं को बनाये रखने में अक्षर-ज्ञान का महत्व था। लेकिन यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि मशहूर मगना कार्टा दस्तावेज पर इंग्लैण्ड के राजा ने मोहर इसलिये लगाई थी कि उसे दस्तखत करने नहीं आते थे, इंग्लैण्ड का राजा अनपढ़ था। और, बादशाह अकबर अँगूठाटेक था।

विगत में अक्षर-ज्ञान सीमित रखने के प्रयास और आज हर एक को साक्षर बनाने की कोशिशें ..... एक गुत्थी लगती है। क्या है यह गुत्थी ? फोकस करते हैं भारतीय उपमहाद्वीप पर।

निरुद्देश्य बनाम उद्देश्यवान

अपने से भिन्न उद्देश्य रखने वाले को बिना उद्देश्य का, निरुद्देश्य कहने का चलन है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने प्लासी के युद्ध में विजय के साथ इस उपमहाद्वीप में राजसत्ता पर कब्जा करना आरम्भ किया। यहाँ मौजूद ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्था को निरुद्देश्य और बर्बर करार दे कर ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने अपना विजय अभियान बढाया।

असभ्यों को सभ्य व उद्देश्यवान बनाने के लिये किये गये सुधारों की फेहरिस्त आज भी बच्चों को रटनी पड़ती है : सती-प्रथा का उन्मूलन, शिक्षा का प्रचार-प्रसार ..... कुछ देशभक्त विद्वान लॉर्ड मैकाले की क्लर्क पैदा करने की शिक्षा-नीति पर तीखे एतराज करते थे/हैं।

लेकिन यह निर्विवाद है कि भारतीय उपमहाद्वीप में स्कूलों के, शिक्षा के, अक्षर-ज्ञान के व्यापक फैलाव की बुनियाद ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने रखी। क्या यह तथ्य गुत्थी के पेंच ढीले करने के लिये पर्याप्त नहीं है ?

चौथ वसूली लूट नब्बे प्रतिशत कानूनसम्मत

राजा-बादशाह द्वारा प्रजा द्वारा पैदा किये में से छठे हिस्से को लेने को न्यायसंगत कहा जाता था। नये राजा बनने को अग्रसर द्वारा उपज के चौथे हिस्से को लेने को चौथ वसूली कहा जाता था, लूट कहा जाता था। आमतौर पर ऊँच-नीच की सामन्ती पद्धति मेहनतकशों की उपज के छठे और चौथे हिस्से को हड़पने के दायरे में रहती थी क्योंकि इससे अधिक हड़पना उस व्यवस्था को बनाये रखते हुये सम्भव नहीं था।

सभ्यता के नये पैरोकारों की दृष्टि में मात्र चौथ-छठ वसूली के दायरे में सिमटी पद्धति निरुद्देश्य पद्धति थी। प्रजा से, मेहनतकशों से अधिक वसूली के लिये नई समाज रचना की, ऊँच-नीच वाली नई समाज व्यवस्था की आवश्यकता उन्होंने प्रस्तुत की।

मुड़ कर देखने पर हम पाते हैं कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी की भूमिका भारतीय उपमहाद्वीप में ऊँच-नीच वाली नई समाज व्यवस्था के लिये आधार तैयार करने वाली की रही है। यहाँ मण्डी के लिये उत्पादन की टिकाऊ बुनियाद के निर्माण में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। किसानों-दस्तकारों के उत्पादन को मण्डी के लिये उत्पादन में बदलने ने मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन वाली वर्तमान समाज व्यवस्था के लिये जमीन तैयार की।

मण्डी व्यवस्था का अधिक वसूली सम्भव बनाने के लिये मूल मन्त्र : व्यापार बढाओ ! उत्पादकता बढाओ !! भौगोलिक व सामाजिक विविधता के दोहन के लिये दूर-दूर से व्यापार और व्यक्ति की उत्पादकता बढाने में स्कूली-शिक्षा, अक्षर-ज्ञान की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका है।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा, फिर ब्रिटिश सरकार द्वारा, और फिर देशी सरकार द्वारा स्कूली-शिक्षा के प्रचार-प्रसार पर विशेष ध्यान को इस सन्दर्भ में देखने की आवश्यकता है कि आज मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका 95-98 प्रतिशत हड़प लिया जाता है। चौथ ही नहीं बल्कि छठा हिस्सा भी लूट थी, इसलिये हमारे द्वारा किये जाते उत्पादन के 98 प्रतिशत को हड़प जाती वर्तमान समाज व्यवस्था की पवित्रतम गऊओं पर चर्चायें करना जरूरी है।

पट्टी पवित्रता की

विद्यालय पर, स्कूली-शिक्षा पर चर्चा आरम्भ करने तक के लिये कितनी कसरत जरूरी लगती है ! आशा है कि काट-कूट-पीट कर बच्चों को मण्डी के माफिक ढालने का ध्येय लिये

(बाकी पेज तीन पर)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

कानून हैं – ●साप्ताहिक छुट्टी के बाद हरियाणा में हैल्पर को इस समय महीने की कम से कम तनखा 1984 रुपये 92 पैसे , अर्ध- कुशल (क) को 2034 रुपये 92 पैसे , अर्ध- कुशल (ख) को 2059 रुपये 92 पैसे , उच्च कुशल मजदूर को 2184 रुपये 92 पैसे कम से कम ; ●जहाँ एक हजार से कम मजदूर हैं वहाँ वेतन 7 तारीख से पहले और जिस कम्पनी में हजार से ज्यादा हैं वहाँ 10 तारीख से पहले ; ●स्थाई काम के लिये स्थाई मजदूर , आठ महीने लगातार काम करने पर परमानेन्ट ; ●ओवर टाइम समेत एक हफ्ते में 60 घण्टों से ज्यादा काम नहीं लेना ,तीन महीनों में 75 घण्टों से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं , ओवर टाइम के लिये पेमेन्ट डबल रेट से ; ●फैक्ट्री शुरू होने के पहले दिन से प्रोविडेन्ट फण्ड , मजदूर के वेतन (बेसिक व डी.ए.) से 10 प्रतिशत काटना और 10 प्रतिशत कम्पनी ने देना , हर महीने 15 तारीख से पहले यह 20 प्रतिशत राशि मजदूर के भविष्य निधि खाते में जमा करना ; ●फैक्ट्री में एक घण्टे की ड्युटी पर भी ई.एस.आई. ; ●कैजुअल व ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को भी 20 दिन पर एक दिन की अर्न्ड छुट्टी तथा त्यौहारी छुट्टियाँ; ●परमानेन्ट- कैजुअल- ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों को एक जैसे काम के लिये समान , बराबर वेतन ;● ....

ग्लोब कैपेसिटर मजदूर : "इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में हम कैजुअल वरकरों को कम्पनी मात्र 48 रुपये दिहाड़ी देती है। हमें ई. एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं।"

डी.पी. आटो वरकर : " प्लॉट 228 सैक्टर- 24 स्थित फैक्ट्री में कैजुअल वरकरों को 1200 रुपये महीना तनखा देते हैं। ई.एस. आई. कार्ड नहीं, पी.एफ. की पर्ची नहीं। लैट्रीनों के दरवाजे ईंटों से चिन दिये हैं – गन्दगी के कारण बहुत ही ज्यादा बदबू मारती थी। लैट्रीनों के बगल में अब पेशाब की भारी सड़ान्ध रहती है। आपरेटरों से ठेकेदार दिन के 24 घण्टे और हफ्ते के सातों दिन काम लेता है। कोई ओवर टाइम पेमेन्ट नहीं और साप्ताहिक छुट्टी भी नहीं। हर ट्यूबवेल पर सिर्फ एक बन्दा रखा है और मात्र 2500 रुपये महीना तनखा है।"

बेनसन इंजिनियरिंग मजदूर : "प्लॉट 57 सैक्टर- 24 स्थित फैक्ट्री में कुछ कैजुअलों को पीस रेट से पैसे देते हैं और बाकी को 1200- 1500- 1800 रुपये महीना देते हैं (1500 और 1800 रुपये मशीनें चलाने वालों को)। किसी भी कैजुअल को ई.एस.आई. कार्ड नहीं, प्रोविडेन्ट रखा है। हमें ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं। वेतन में से प्रोविडेन्ट फण्ड के पैसे काटते हैं पर हमें पी.एफ.की पर्ची नहीं देते।"

एमफोर्ज वरकर : "जनवरी का वेतन आज 16 फरवरी तक हमें नहीं दिया है। उत्पादन हो रहा है और कहते हैं कि कम्पनी बेच दी है। कम्पनी का ट्रूव्हील से नाम एमफोर्ज हुआ था।"

नेपको गियर मजदूर : " जनवरी की तनखा हमें आज 18 फरवरी तक नहीं दी है।"

क्लच आटो वरकर : " तनखा का झँझट जारी है। कभी 5 लाख तो कभी 2 लाख रुपये

मैनेजमेन्टों की लगाम

हर कार्यस्थल पर हजारों तार होते हैं ; हजारों नट- बोल्ट होते हैं ; नालियाँ- सीवर होते हैं ; कई- कई ऑपरेशन होते हैं ; रात- दिन को लपेटे शिफ्टें होती हैं। इसलिये मैनेजमेन्टों को रोकने- डाटने के लिये मजदूरों के हाथों में कारगर लगाम हैं : ✶ पाँच साल दौड़ने वाली मशीनें छह महीनों में टें बोल दें ; ✶ कच्चा माल- तेल- बिजली उत्पादन के लिये आवश्यक मात्रा से डेढी- दुगनी इस्तेमाल हो ; ✶ ऑपरेशन उल्टे- पल्टे हो कर क्वालिटी को गँगा नहा दें ; ✶ बिजली कभी कड़के , कभी दमके , कभी आँख- मिचौनी करने मक्का- मदीना चली जाये ; ✶ अरजेन्ट मचा रखी हो तब ऐसे ब्रेक डाउन हों कि साहबों को हृदय रोग हो जायें।

बिना किसी प्रकार की झिझक के , शान्त मन से , ठन्डे दिमाग से सोच- विचार कर कदम उठाने चाहियें।

टट्टी लगने पर मजदूरों को बोतल ले कर फैक्ट्री से बाहर जाना पड़ता है।"

अमेटीप मशीन टूल्स मजदूर : "दिसम्बर का वेतन 13 फरवरी को जा कर दिया। आज 14 फरवरी है, अभी तो जनवरी की तनखा की चर्चा तक नहीं है। मैनेजमेन्ट कहती है कि वरकर नौकरी छोड़ कर जायें ,कम्पनी के पास हिसाब देने तक के लिये पैसे नहीं हैं। साहब लोग यह भी कहते हैं कि वे हम रे बच्चों के लिये दुआ करेंगे।"

प्रभा उद्योग वरकर : "फैक्ट्री में ओरियन्ट फैन का काम होता है। यहाँ सैक्टर- 6 से सैक्टर- 58 में फैक्ट्री ले जा रहे हैं। 60 में से 25 मजदूरों को 1300 रुपये महीना तनखा देते हैं और इन 1300 में से भी 300 रुपये प्रोविडेन्ट फण्ड के नाम से काट कर मजदूर के हाथ में सिर्फ 1000 रुपये महीना देते हैं। नौकरी छोड़ने पर फण्ड फार्म भरवाने के लिये चक्कर पर चक्कर कटवाते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते।"

विक्टोरा टूल्स मजदूर : " सैक्टर- 25 स्थित फैक्ट्री में जनवरी का वेतन आज 18 फरवरी तक हमें नहीं दिया है।"

नगर निगम वरकर : " ट्यूबवेल चलाना नगर निगम ने ठेकेदार को सौंप कर पूरी अन्धेरगर्दी मचवा दी है। हम 120 ट्यूबवेल फण्ड की पर्ची नहीं।"

न्यू एलनबरी वरकर : "ठेकेदारों के जरिये कम्पनी ने बच्चे तक फैक्ट्री में लगा लिये हैं – 13 से 16 साल के बच्चे रेहड़ी खींचते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को 1200- 1300- 1400 रुपये महीना तनखा दी जाती है। कम्पनी ने कैन्टीन बन्द कर दी है, वार्षिक टूर बन्द कर दिया है और 5- 10- 15- 20 वर्ष की नौकरी पर सर्विस अवार्ड देने बन्द कर दिये हैं। जनवरी की तनखा हमें आज 14 फरवरी तक नहीं दी है।"

ब्रॉन लेबोरेट्री मजदूर : " इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में जनवरी का वेतन हमें आज 15 फरवरी तक नहीं दिया है। दिसम्बर की तनखा भी हमें 22 जनवरी को जा कर दी थी।"

फर आटो वरकर : "दिसम्बर और जनवरी की तनखायें हमें 14 फरवरी तक नहीं दी हैं। क्या करें? काम है ही नहीं – ठप्प क्या करें?"

एस.पी.एल. मजदूर : " प्लॉट 27 सैक्टर- 25 स्थित फैक्ट्री में चैकर और हैल्पर हो कम्पनी ने स्वयं रखे हैं। बाकी हम 150 वरकरों को ठेकेदारों के जरिये पीस रेट पर करके बाँटते हैं। आज 16 फरवरी तक जनवरी की तनखा कुछ मजदूरों को ही दी है।"

प्रिन्स इन्डस्ट्रीज मजदूर : "ए 25 , 16/5 कारखाना बाग मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 1000- 1200 रुपये महीना तनखा देते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं , फण्ड नहीं। दस- बारह घण्टे रोज काम , ओवर टाइम की पेमेन्ट सिंगल रेट से।"

आटोपिन वरकर : " इन्डस्ट्रील एरिया स्थित फैक्ट्री में हमें नवम्बर , दिसम्बर और जनवरी की तनखायें आज 19 फरवरी तक नहीं दी हैं।"

रजिस्ट्रेशन ऑफ न्यूज पेपर सेंटर रूल्स 1956 के अनुसार स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (रूल नं. 8)

फरीदाबाद मजदूर समाचार

1. प्रकाशन का स्थान — मजदूर लाइब्रेरी आटोपिन झुग्गी , फरीदाबाद–121001
2. प्रकाशन अवधि — मासिक
3. मुद्रक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
4. प्रकाशक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
5. संपादक का नाम — शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों। केवल शेर सिंह

मैं, शेर सिंह, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनाँक 1 मार्च 2002 — हस्ताक्षर शेर सिंह प्रकाशक

ओखला से

कॉन्टिनेन्टल टेलीपावर मजदूर : "ओखला फेज-II स्थित फैक्ट्री में कार्यरत कैजुअल तथा ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। एक्सीडेन्ट होने पर कम्पनी एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरती। दवाई के पैसे दे देते हैं पर हर्जाना नहीं देते। हमें दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं देते। प्रोविडेन्ट फण्ड भी हमारा नहीं है।"

रानुट्रोल वरकर : "ओखला फेज-I में डी-22 और एफ-85 में कम्पनी की फैक्ट्रियाँ हैं। डी-22 में 100 और एफ-85 में 350 मजदूर काम करते हैं। हम में 5 से 27-28 वर्ष की नौकरी वाले हैं। अगस्त 2001 का वेतन देने के समय मैनेजमेन्ट ने हमें वेतन नहीं दिया। उल्टे, 11 सितम्बर 2001 को कम्पनी ने 107 मजदूरों के भिवाड़ी, राजस्थान ट्रान्सफर के नोटिस फैक्ट्रियों के गेटों पर लगा दिये। चार महीने बाद मुड़ कर देखते हैं तो अब साफ-साफ दीखता है कि तनखा देने की बजाय ट्रान्सफर का नोटिस लगा कर मैनेजमेन्ट ने हमें छेड़ा था। लेकिन तब हम कम्पनी के भड़कावे में आ गये थे और हम सब मजदूर फैक्ट्रियों के बाहर आ कर गेटों पर बैठ गये। बाहर क्या हुये, हम कम्पनी के जाल में फँस गये। महीने पर महीना गुजरता गया है और मैनेजमेन्ट बात करने तक को तैयार नहीं है। हम यूनियन, लेबर कमिश्नर, एम एल ए और पार्षद से मिले हैं पर हमें कोई फायदा नहीं हुआ। हमारी अगस्त और सितम्बर की 10 दिन की तनखायें तक मैनेजमेन्ट ने नहीं दी हैं। कम्पनी की छँटनी करने की योजना है।" (इस सन्दर्भ में दिसम्बर में भेजा गया पत्र हमें मिला नहीं और 31 जनवरी का पत्र फरवरी अंक के छपने चले जाने के बाद मिला)

कुछ फुरसत में

प्रिन्टर्स हाउस मजदूर : "ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। चोट लगने पर कहते हैं कि अपने पैसों से इलाज करवाओ और बिल दे दो। लेकिन बिल देने पर कम्पनी पैसे नहीं देती! फैक्ट्री में पेन्टशॉप है लेकिन रंग का अधिकतर कार्य पेन्टशॉप से बाहर करवाते हैं – पूरी फैक्ट्री में थिन्नर और अन्य रसायनों की बदबू वरकरों को परेशान करती है। पेन्ट करने वाले मजदूरों को मास्क नहीं देते और जो पुराने कपड़े नाक-मुँह पर बाँधने को देते हैं वो इतने गन्दे होते हैं कि मुँह पर उन्हें बाँधना स्वयं में एक यातना है। फैक्ट्री में पीने के पानी तक का प्रबन्ध नहीं है – मजबूरन खारा पानी पीना पड़ता है जिससे पेट में गैस बनती है। कैन्टीन बहुत गन्दी रहती है और लैट्रीनों का तो इतना बुरा हाल है कि क्या कहें। मैनेजमेन्ट जबरन ओवर टाइम काम करवाती है, पेमेन्ट डबल की बजाय सिंगल रेट से देती है और वे पैसे भी दो महीने बाद। आई.टी.आई. किये वरकरों को प्रिन्टर्स हाउस में ठेकेदारों के जरिये रखते हैं और 1500-1600 रुपये महीने की तनखा देते हैं।"

इन्डियन हार्डवेयर इन्डस्ट्रीज वरकर : "फैक्ट्री में 100 मजदूर काम करते हैं और 4-5 कम्पनियाँ दिखा रखी हैं। सिर्फ 7 को ई.एस.आई. कार्ड दिये हैं, हम 93 को नहीं। हम में से कई यहाँ 8-10 साल से काम कर रहे हैं पर हमें प्रोविडेन्ट फण्ड की पर्ची भी नहीं देते। हमें 1200-1300-1400 रुपये महीना तनखा देते हैं पर दस्तखत 1985 रुपये पर करवाते हैं। ओवर टाइम काम की पेमेन्ट भी सिंगल रेट से देते हैं पर हस्ताक्षर डबल रेट पर करवाते हैं। भर्ती करते समय वरकर से 15-20 कोरे कागजों और ब्लैन्क वाउचरों पर दस्तखत करवाते हैं। मैनेजमेन्ट कहती है कि लेबर डिपार्टमेन्ट, पुलिस, प्रशासन, लेबर कोर्ट हमारी जेब में हैं। साहब लोग कहते हैं कि जहाँ जाना है जाओ, तुम्हारे से पैसे काट कर ही हम इन्हें देते हैं। पिछले साल अगस्त में फैक्ट्री में हुये एक्सीडेन्ट में एक वरकर का पैर दो-तीन जगह से बुरी तरह से टूट गया – प्लेट लगानी पड़ी है। कम्पनी ने उस वरकर का भी ई.एस.आई. कार्ड नहीं बनवाया था लेकिन पहले जहाँ वह काम करता था वहाँ का ई.एस.आई. कार्ड उस वरकर के पास था। उस दूसरी फैक्ट्री के कार्ड पर उसका ई.एस.आई. अस्पताल में इलाज हुआ। इधर उस वरकर ने ड्युटी ज्वाइन कर ली है। अब हार्डवेयर मैनेजमेन्ट कोरे कागजों और ब्लैन्क वाउचरों पर हस्ताक्षर करवाने के लिये उस मजदूर को परेशान कर रही है जबकि सब वरकर उसे दस्तखत नहीं करने की कह रहे हैं।"

मितासो एप्लाइन्सेज मजदूर : "कई किस्म के कैजुअल और ठेकेदारों के जरिये वरकर रख कर कम्पनी न्यूनतम वेतन, प्रोविडेन्ट फण्ड, ई.एस.आई. आदि कानूनों का उल्लंघन करती है। परमानेन्ट वरकरों को कम्पनी निकालने में लगी हुई है और मैनेजमेन्ट ने मुझे भी नौकरी से निकाल दिया है लेकिन मैंने नौकरी से बर्खास्तगी को चुनौती दी है। पिछले वर्ष का बोनस कम्पनी ने मेरे सहकर्मियों को दिया पर मुझे देने से इनकार कर दिया। इस पर मैंने श्रम विभाग में शिकायत डाली। दो तारीखों पर कम्पनी उपस्थित नहीं हुई। तीसरी तारीख पर कम्पनी हाजिर हुई और मुझे 10 प्रतिशत बोनस की राशि दी – मेरे सहकर्मियों को 20 प्रतिशत बोनस दिया था पर कम्पनी सरासर झूठ बोली कि 10 प्रतिशत दिया है। मैंने 10 प्रतिशत बोनस ले लिया और बाकी 10 प्रतिशत के लिये फिर श्रम विभाग में शिकायत डाली। एक बार फिर दो तारीखों पर मितासो मैनेजमेन्ट उपस्थित नहीं हुई। तीसरी तारीख पर हाजिर हो कर कम्पनी ने फिर मुझे 10 प्रतिशत की राशि दी।"

प्रदूषण फैल रहा

भागो दिल्ली से दूर, प्रदूषण फैल रहा।
यह है भारत का नूर, प्रदूषण फैल रहा।

क्यों कोई यहाँ दिखेगा, फटी चिथड़ियों में
क्यों कोई यहाँ रहेगा, झुग्गी झोंपड़ियों में
क्यों देश की इज्जत लेंगे फुटपाथी रह कर
अब नहीं उड़ेगी धूर, प्रदूषण फैल रहा।

हर कल कारखाने बन्द अभी करवायेंगे
सब बने विदेशी माल यहाँ मँगवायेंगे
मिट जायेगा सब शोर-शराबा उद्यम का
क्यों दिखेंगे चूर मजूर, प्रदूषण फैल रहा।

है पाँच सितारा होटल का यह शहर-नगर
संसद का साथी राजद्वार है डगर-डगर
चकमक चकमक हर ओर चकाचक फैलेगा
क्यों बसा यहाँ मजबूर, प्रदूषण फैल रहा।

हर सड़क गली में मोटर कारें दौड़ेंगी
कारोबारी आका सरकारें – दौड़ेंगी
यह अरब-खरब पति, कोटि कोटि पति की नगरी
छोटे जन जायें दूर, प्रदूषण फैल रहा।

है राजधानी यह, लोग रहेंगे बड़े बड़े
भोगेंगे राजघराने सुख सब पड़े पड़े
सारी दुनिया के लोग बड़े दर्शन देंगे
छोटे से इज्जत चूर, प्रदूषण फैल रहा।

मजदूरों की बोली बानी दुर्गन्धपूर्ण
रहना सहना खाना-पानी दुर्गन्धपूर्ण
क्यों रहे यहाँ दुर्गंध मूल बन कर कलंक
क्यों रहे यहाँ मजदूर, प्रदूषण फैल रहा।

लँदन, वाशिंगटन, पेरिस, टोकियो, रूर रहे
छँटनी कर दो भरपूर, शूर और हूर रहे
धनपति, जादूगर, ब्रोकर, क्रूर लंगूर रहे
देशी का मद हो चूर, प्रदूषण फैल रहा।

है स्वर्ग, यहाँ बस देव व उनके देव रहें
अप्सरा, मेनका, ज्योतिषि, चारण, सहदेव रहें
मत भीड़ मचाओ, ऐश अमन से करने दो
भूलो पिछले दस्तूर, प्रदूषण फैल रहा।

– सुरेश कांटक, बक्सर

बातें... कौनसी बातें?....

(पेज एक का शेष)

विद्यालय-रूपी संस्था पर आपस में अधिक सहज बातचीत "बच्चों का भविष्य" वाली पवित्र पट्टी को ढीली कर, खोल कर सम्भव होगी। कैसा है भविष्य? वर्तमान समाज व्यवस्था की भाषा घटनाओं की भाषा है और इसकी भाषा में कहें तो गुजरात में कत्लेआम पटाखा है, आने वाले बम धमाकों की तुलना में जो कि वर्तमान समाज व्यवस्था के बनी रहने पर अनिवार्य दिखते हैं।

बच्चे कच्चा माल, अध्यापक ऑपरेटर, अन्य कर्मचारी हैल्पर, स्कूल फैक्ट्री... कैसी तस्वीर है? हम अपने बच्चों को मण्डी में बिकने के लिये तैयार करते हैं... कैसी बात है यह? आइये विद्यालय पर, वर्तमान समाज व्यवस्था पर प्रश्न-चिन्ह लगायें। (जारी)■

फौज-फौज

" कच्छ से ले कर कश्मीर तक पूरी सीमा पर फौज तैनात किये जाने की वजह से सीमावर्ती इलाकों के निवासियों की दुर्दशा के बारे में ... ' मजदूर एकता लहर' अखबार में ... सही बताया है कि इन इलाकों में फसल बर्बाद हो गई है , खेतों में माइन लगाने से लोग मरे हैं और पूरे- पूरे गाँवों के लोगों को घर- बार छोड़ कर सीमा से दूर अन्दर भागना पड़ा है। ... लेकिन यह सब तो हमारे लोगों की दुर्दशा का बहुत छोटा हिस्सा है।

" सीमा से वापस आने वाले हमारे परिवारों के साथ और भी बुरी घटनायें हुई हैं। सीमा पर तैनात किये फौजियों ने हमारी जवान लड़कियों व महिलाओं से बलात्कार किया है। जब लोगों ने फौजी अधिकारियों से इसके बारे में शिकायत की तो एक वरिष्ठ फौजी अफसर ने अपनी बेबसी प्रकट की। कुछ कदम उठाने की बजाय उन्होंने गाँववालों से यह गुजारिश की कि सभी जवान लड़कियों को सीमा से दूर , अन्दर हटा दिया जाये और सिर्फ पुरुषों व बुजुर्गों को ही सीमा के पास वाले इलाकों में रहने दिया जाये। परन्तु सीमावर्ती इलाकों में फौजियों ने गाँवों के अन्दर ही अपनी छावनी बना ली हैं और लोगों से जबरदस्ती कर रहे हैं कि उनके परिवार गाँव में ही रहें ताकि फौज की उपस्थिति पाकिस्तानी सेनाओं से छुपी रहे। ...

" नोहर से हमारे मित्र और रिश्तेदार बताते हैं कि गँगानगर जिले में भी ऐसी घटनायें घटी हैं और वहाँ की पूरी आबादी दहशत का सामना कर रही है। सीमा से 140 किलोमीटर की दूरी तक फौज तैनात की गई है। लड़कियों का बलात्कार और कत्ल किया गया है। 'आतंकवादियों' को ढूँढने के बहाने फौजी लोग दिनदहाड़े तलाशी लेने आ जाते हैं परन्तु असलियत में वे लूटने के लिये माल ढूँढते हैं और अपनी हवस को पूरी करने के लिये लड़कियों को तलाशते हैं। फिर वे रात को वापस आ कर अपना गन्दा काम करते हैं। ऐसी एक घटना के बाद एक पूरी पँचायत ने प्रदर्शन किया परन्तु अधिकारी इन घटनाओं की खबर को दबा देते हैं और अपराधियों की हिफाजत करते हैं। ..." ('मजदूर एकता लहर' के फरवरी 16- 28 अंक में सिरसा से गोपाल का पत्र)

एस्बेस्टोस

हैदराबाद इन्डस्ट्रीज मजदूर : " पिछले साल फैक्ट्री में कार्यरत 6 परमानेन्ट मजदूर मर गये – किसी को कैन्सर , किसी को टी.बी. बताया। यह सिलसिला साल- दर- साल का है और यह एस्बेस्टोस के कारण है। कई घातक बीमारियों की जननी एस्बेस्टोस पर कई देशों में 30- 40 साल से कानूनी रोक है। एस्बेस्टोस की पुरानी चद्दरों से फैले एस्बेस्टोस प्रदूषण पर स्कूल बिल्डिंग खाली करवाना जब- तब अखबारों में खबर बनता है। लेकिन हम एस्बेस्टोस चद्दरों का निर्माण करने को अभिशप्त- से हैं और प्रचार द्वारा उपभोक्ताओं को फाँसने का खेल भी जारी है। कम्पनी का नाम हैदराबाद एस्बेस्टोस से बदल कर हैदराबाद इन्डस्ट्रीज कर दिया है लेकिन फैक्ट्री में एस्बेस्टोस का इस्तेमाल बदस्तूर जारी है। और जारी हैं एस्बेस्टोस से होती घातक बीमारियाँ व मौतें। टी.बी. बता कर सैनेटोरियम भेजने और फिर बीमार को 'वी आर एस' दे कर खाँसने- मरने के लिये घर भेजना जारी है। कम्पनी ने पर्दों पर पर्दे डालने के लिए परमानेन्ट वरकरों की जगह ठेकेदारों के जरिये वरकर रखने की रफ्तार बढा दी है।" (**नोट :** इस वर्ष जनवरी में तेल- खुदाई वाली विशाल हैलीबर्टन कम्पनी पर एस्बेस्टोस सम्बन्धित नुक्सान के लिये अमरीका में अदालतों ने चार फैसले सुनाये हैं। एस्बेस्टोस से नुक्सान पहुँचाने के लिये हैलीबर्टन को साढे सात सौ करोड़ रुपये हर्जाना देने के आदेश अदालतों ने दिये हैं। जनवरी 2000 से अब तक 9 बड़ी अमरीका स्थित कम्पनियों ने एस्बेस्टोस से नुक्सान पहुँचाने के लिये हर्जाने के मुकदमे किये जाने पर कम्पनी को दिवालिया घोषित किया जाने के कागजात दाखिल किये हैं।)

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

✶ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

✶ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये।

✶ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये- पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

विचारणीय

✶ **एस.पी. थ्रेड मजदूर :** " फैक्ट्री में हम आपस में चर्चा करते हैं तो हमें एक कदम की बजाय अनेक कदम उठाना ठीक लगता है। यह सही है कि मजदूर अपने- अपने ढँग से कदम उठायें तो मैनेजमेन्टों पर लगाम लगती है। लेकिन कुछ मजदूर लालच में आ जाते हैं और लालची मजदूर भी लीडरों की ही तरह सब मजदूरों का नुकसान करते हैं।"

✶ **एस.पी.एल. वरकर :** " न्यूनतम वेतन , कार्य के घण्टे, ओवर टाइम आदि कानूनों का कम्पनी खुलेआम उल्लंघन करती है लेकिन श्रम विभाग से कोई अधिकारी आता है तो कम्पनी कुछ वरकरों के बयान दिलवा देती है कि फैक्ट्री में कानूनों का पालन होता है। बाद में हमें पता चलता है और हम उन लोगों को बहुत जलील करते हैं। लेकिन हर बार किसी न किसी के जरिये मैनेजमेन्ट खानापूर्ति करवा देती है। सरकारी अधिकारी उन्हीं लोगों से बात करते हैं जिन्हें कम्पनी उनके सामने पेश करती है। यह अफसर स्वयं किसी मजदूर के पास जा कर बात नहीं करते। असल में , सरकारी अधिकारी भी खानापूर्ति करने के लिये ही आते हैं।"

✶ 18 अक्टूबर से टूल डाउन और 27 अक्टूबर से फैक्ट्री के बाहर रह कर हड़ताल कर रहे सैक्टर- 6 में प्लॉट 74 व 75 स्थित **टालब्रोस इंजिनियरिंग** के मजदूरों ने साढे चार महीने मैनेजमेन्ट की नाक में दम रखा है। पूरी सर्दी फैक्ट्री के बाहर दिन- रात यह मजदूर जमे रहे हैं। जेल और नौकरी से बर्खास्तगियाँ टालब्रोस मजदूरों को तोड़ नहीं पाई। कठिनाइयों से जूझते हुये घनिष्ठ दोस्तियाँ बनी हैं। बड़े नेताओं द्वारा पिटी राह पर धकेल दिये जाने और फिर रस्मी समर्थन द्वारा पैदा की निराशाजनक हालात में टालब्रोस मजदूरों का साढे चार महीने जूझना अपने आप में एक उल्लेखनीय बात है। लीडरों के हुक्म पर फैक्ट्री से बाहर हो जाना, आदेश पर उठना- बैठना, नेताओं के हुक्मों की बाट देखना दलदल में अधिकाधिक धँसाता है। लखानी शूज में 1996 में इस राह ने 1400 मजदूरों की नौकरी खाई। समय के साथ गलत राह का दिवालियापन अधिक से अधिक उजागर होता है। ऐसे में मजदूरों द्वारा आपस में आरोप- प्रत्यारोप लगाना नेताओं के बड़े काम का है। लीडरों का ऐसे में फिकरा है : " हम क्या करें , मजदूर ही टूट गये "! मजदूरों द्वारा एक- दूसरे पर आरोप मढने और बड़े नेताओं को बरी करने की कसरत टालब्रोस में भी शुरू हो गई है। जगह- जगह के अनुभवों को देखते हुये इस नौटँकी पर पर्दा डाल कर हमें राहों, तरीकों पर मन्थन- चिन्तन करना चाहिये। इन साढे चार महीनों में टालब्रोस मजदूरों के बीच जो दोस्तियाँ हुई हैं उनके और सुदृढ होने की हम कामना करते हैं ताकि मुँह बाये खड़ी बढती दिक्कतों से मजदूर बखूबी निपट सकें। जो अनुभव हुये हैं उनका मूल्याँकन और उनसे सबक लेना दोस्तियों को मजबूती देगा।

✶ 23 नवम्बर से नेताओं के आदेश पर फैक्ट्री गेट के बाहर बैठे **एस्कोर्ट्स रेलवे इक्विपमेन्ट डिविजन** मजदूर मन मसोस कर 20 फरवरी को मसले जस के तस छोड़ कर नेताओं के आदेश पर फैक्ट्री के अन्दर गये। ऐसे में बार- बार लगी ठोकरों से सबक लेने, अनुभवों की रौशनी में तरीकों- राहों पर विचार- विमर्श करने की बजाय गुटबाजी के आधार पर तर्क- कुतर्क करना बर्बादी की राह को पुख्ता करना है। एक विचारणीय कथन है : जितने ज्यादा कोई लोग राजनीतिक बनते हैं , उतना ही अधिक वे लोग अपना बेड़ा गर्क करते हैं।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233** पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।